Sub:- Philosophy
Class:- B.A, Part-II (Hons)
Paper:- IV

लाइबनीज का पूर्व स्थापित सामन्जस्य नियम (प्रथम भाग)

Doctrine of Pre-established Harmony of Leibniz

⟹ लाइबनीज का दर्शन कुछ नियमों पर आधारित है जिनमें पूर्व स्थापित सामन्जस्य नियम सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं पूर्णतः मौलिक है। लाइबनीज ने इस नियम के माध्यम से दर्शन की कई मूल भूत समस्याओं का समाधान करने का प्रयास किया है। अतः इसकी व्याख्या लाइबनीज के दार्शनिक विचारों को समझने के लिए आवश्यक है।

सर्वप्रथम यह जानना आवश्यक है कि पूर्व स्थापित सामन्जस्य नियम क्या है? लाइबनीज ने कहा है कि चिद्बिन्दु अपनी योग्यता और अवस्था में एक दूसरे से भिन्न है तथा उनमें एक चिद्बिन्दु सर्वश्रेष्ठ या परम चिद्बिन्दु है जिसे उन्होंने ईश्वर चिद्बिन्दु कहा है। फिर क्योंकि लाइबनीज के अनुसार ईश्वर जो सारे चिद्बिन्दुओं का एक मात्र निर्माता है वह सर्वज्ञाता, सर्वशक्तिमान एवं विचारपूर्ण है। चूंकि ईश्वर

सर्वज्ञाता और सर्वशक्तिमान है तथा उसी ने सारे चिद्बिन्दुओं का निर्माण किया है इसलिए इन छिद्ररहित चिद्बिन्दुओं ~~से~~ के निर्माण से पूर्व ही उसे इनके स्वरुप का पता था कि ये छिद्ररहित एवं स्वतन्त्र होंगे। अतः ईश्वर ने इनकी रचना करने से पूर्व ही एक ऐसे नियम की रचना कर दी थी जिसके परिणाम स्वरुप इन असंख्य एवं विभिन्न चिद्बिन्दुओं के बीच एक मेल या सामन्जस्य बना रहे। लाइबनीज के अनुसार यह नियम एक असामान्य नियम है और इसे ही उन्होंने पूर्व स्थापित सामन्जस्य नियम कहा है।

लाइबनीज के अनुसार ईश्वर ने प्रारम्भ में ही छिद्ररहित चिद्बिन्दुओं के बीच एक असामान्य सामन्जस्य की स्थापना कर दी थी जिसके परिणाम स्वरुप उनके बीच हमें एक प्रकार के मेल का अनुभव होता है। उदाहरण के लिए जब चेतन चिद्बिन्दु में किसी प्रकार की कोई इच्छा होती है तो उसके अनुरुप शारीरिक चिद्-बिन्दुओं में सक्रियता आती है। परन्तु यहाँ यह कहना आवश्यक है कि मन और ~~शरीर~~ शरीर के बीच का यह सामन्जस्य उनके बीच क्रिया-प्रतिक्रिया के रुप में नहीं होता है जैसा कि देकार्त ने बताया है। इससे भिन्न लाइबनीज के अनुसार उनके बीच एक पूर्व स्थापित

सामन्जस्य है और इसलिए मन की इच्छा और शरीर की क्रिया साथ-साथ होती है। विभिन्न चिद्बिन्दुओं के बीच निहित यह सामन्जस्य एक विशिष्ट चमत्कार है जिसकी रचना ईश्वर ने की है। लाइबनीज ने स्वयं कहा है कि यह सत्य है कि पूर्व स्थापित सामन्जस्य नियम में एक अलौकिक चमत्कार है जिसकी रचना ईश्वर ने की है और उसके बाद सम्पूर्ण प्रकृति उस सामन्जस्य के अनुकूल संचालित है।

परन्तु यहाँ पर लाइबनीज के विरुद्ध एक आपत्ति की जा सकती है कि यदि ईश्वर ने इन छिद्ररहित चिद्बिन्दुओं के निर्माण से पूर्व ही इन्हे सामन्जस्य नियम में बांध दिया गया तो फिर उन्हें स्वतन्त्र कैसे कहा जा सकता है जैसा कि लाइबनीज का कथन है? क्या सामन्जस्य में बंधे होने के उपरान्त भी उन्हें पूर्णतः स्वतन्त्र कहा जाना उचित है?

इसके उत्तर में लाइबनीज ने कहा है कि वस्तुतः प्रकृति में कोई भी वस्तु या तथ्य ऐसा नहीं जिसे दूसरी वस्तु या तथ्य की अपेक्षा न हो अर्थात् प्रत्येक वस्तु को दूसरी वस्तुओं की आवश्यकता

Date 11/05/20
Page 4

होती है क्योंकि यदि ऐसा नहीं होता तो किसी भी वस्तु का वह स्वरूप भी नहीं होता जो उसका वर्तमान में है। दूसरे शब्दों में हर वस्तु को दूसरी वस्तुओं की अपेक्षा होती है लेकिन फिर भी वे स्वतन्त्र है। लाइबनीज ने अपने इस विचार को स्पष्ट करने के लिए एक उपमा का प्रयोग किया है। उन्होंने कहा है कि " जिस प्रकार आरकेस्ट्रा (orchestra) के प्रत्येक वाद्ययन्त्र पूर्णतः एक दूसरे से स्वतंत्र होते है क्योंकि प्रत्येक के बजाने वाले अलग-अलग व्यक्ति होते है परन्तु फिर भी सभी वाद्ययन्त्रों में एक मेल या सामन्जस्य होता है जिससे मधुर ~~संगीत~~ संगीत उत्पन्न होता है ठीक उसी प्रकार प्रत्येक चिद्‌बिन्दु पूर्णतः स्वतंत्र है पर ईश्वर रचित सामन्जस्य के कारण उनमें आपसी मेल बना होता है और यही कारण है कि वस्तुओं का वर्तमान रूप बना है।

(The Combination of Independence and harmony may be compared to different choirs of musicians Playing their Part sapatately and so Sitated that do not see or even hear one another nevertheless they Keep Prepectly togather, by each following their own notes, in such a way that one who hears

them all finds in them a harmony that is wonderful and much more perfect than if there had been any connection between them!" – Leibniz, Monadology – P-80.

लाइबनीज ने अपने दार्शनिक विचारों को मुख्य रूप से उस काल की मुख्य पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से लेखों के रूप में व्यक्त किया। ~~1680~~ 1684 ई० में ईश्वर के पक्ष में दिए गए तात्विक युक्ति के समर्थन में एवं 1685 ई० में अपने पदार्थ विचार से सम्बन्धित सिद्धांतों को लेखों के माध्यम से उन्होंने व्यक्त किया था। अनेक महत्वपूर्ण लेखों के अतिरिक्त जिन ग्रन्थों की रचना लाइबनीज ने की है उनमें Nouveaux Essais (1703), प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त Theodicee जिसमें वे सिद्ध करते हैं कि ईश्वर ने विश्व की रचना इस पूर्ण में कि के वह स्वतः संचालित रहे।

शेष अगले भाग में

Dr. Md. Arshad Ali
Deptt. of Philosophy
Jagjiwan College
V.K.S.U, Ara.